

दि कर्मिक पोस्ट

Global
School Of
Excellence,
Obedullaganj

वर्ष : 10, अंक : 24

(प्रति बुधवार), इन्दौर, 15 जनवरी 2025 से 21 जनवरी 2025 पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

दुनिया भर में प्लास्टिक के उचित प्रबंधन व रीसाइक्लिंग न होने से बढ़ रहा है माइक्रोप्लास्टिक का खतरा- शोध

नई दिल्ली। रीसाइक्लिंग की कमी से माइक्रोप्लास्टिक के निर्माण में भी बढ़ोतरी होती है, जो पारिस्थितिकी तंत्र और मनुष्य के स्वास्थ्य दोनों के लिए खतरनाक है। वर्तमान में माइक्रोप्लास्टिक के कण लगभग हर जगह पाए जाते हैं चाहे वह पानी हो, भोजन, मछली और यहां तक कि स्तन के दूध में भी इसको देखा गया है। इसलिए शोधकर्ता इस बात पर जोर दे रहे हैं कि इन खतरों को कम करने के लिए कचरे का उचित प्रबंधन बहुत जरूरी है। यह शोध काउनास यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी (केटीयू) के शोधकर्ता की अगुवाई में किया गया है।

पिछले एक दशक में दुनिया भर में, खासकर यूरोप में प्लास्टिक का उपयोग बहुत बढ़ गया है। आंकड़ों से पता चलता है कि 2021 में यूरोपीय संघ (ईयू) में हर एक व्यक्ति ने औसतन 36 किलोग्राम प्लास्टिक पैकेजिंग का कचरा पैदा किया। उस साल उत्पन्न 1.6 करोड़ टन से अधिक प्लास्टिक पैकेजिंग में से केवल 65 लाख टन का ही रीसाइक्लिंग या पुनर्चक्रण हो पाया। दुनिया भर में प्लास्टिक रीसाइक्लिंग एक बड़ी गंभीर समस्या बनी हुई है। रीसाइक्लिंग की कमी से न केवल लैंडफिल, भस्मीकरण संयंत्रों और प्रकृति में छोड़े गए कचरे की मात्रा बढ़ जाती है, बल्कि माइक्रोप्लास्टिक के निर्माण में भी बढ़ोतरी होती है, जो पारिस्थितिकी तंत्र और मनुष्य के स्वास्थ्य दोनों के लिए खतरनाक है। शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया कि स्थिति को सुधारने के लिए, कचरे का प्रबंधन प्रक्रिया को केवल एक तरफ से हल नहीं किया जा सकता है। यह एक बहुआयामी समस्या है और इसलिए, इसके प्रति व्यापक नजरिए की जरूरत है। सस्टेनेबिलिटी नामक पत्रिका में प्रकाशित शोध में कहा गया है कि आर्थिक, पर्यावरणीय और कानूनी पहलुओं पर विचार किए बिना केवल रीसाइक्लिंग तकनीकों को



बेहतर बनाने या नए तरीके खोजने पर जोर देना ही सही नहीं है। यह नजरिया न केवल समस्या से निपटने में विफल होगा, बल्कि अन्य पहलुओं पर विचार करने को भी कम कर सकता है। इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए कि बाहरी कारण प्लास्टिक पैकेजिंग रीसाइक्लिंग को कैसे प्रभावित करते हैं, शोधकर्ताओं ने एक मैक्रो-पर्यावरणीय विश्लेषण किया जिसमें छह प्रमुख क्षेत्रों की जांच की गई, जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, पारिस्थितिकी और कानूनी कारण शामिल थे। वर्तमान में माइक्रोप्लास्टिक के कण लगभग हर जगह पाए जाते हैं चाहे वह पानी हो, भोजन, मछली और यहां तक कि स्तन के दूध में भी इसको देखा गया है। राजनीतिक और कानूनी कारणों में प्लास्टिक पैकेजिंग कचरे के प्रबंधन को नियमित करने के लिए कई तरह के कानून और नीतियां शामिल हैं। वे उत्पादकों, कचरा प्रबंधकों और रीसाइक्लिंग करने वालों को नियंत्रित करने में मदद करते हैं, लेकिन अक्सर सुचारू और कुशल कचरा प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए सही नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए, लंबे समय तक, यूरोपीय संघ की प्लास्टिक पैकेजिंग कचरा प्रणाली 30 साल पहले अपनाए गए पैकेजिंग और पैकेजिंग अपशिष्ट निर्देश द्वारा चलाई जा रही थी, जिसने निर्धारित लक्ष्यों को कैसे पूरा किया जाए, यह तय करने का काम देशों पर छोड़ दिया। परिणामस्वरूप इन लक्ष्यों को पूरा करना अक्सर मुश्किल होता था, क्योंकि देश उन्हें अलग-अलग तरीकों से लागू करते हैं। शोध के मुताबिक, साल 2024 तक एक नया नियम अपनाया नहीं गया था, जो जल्द ही लागू हो जाएगा और सभी देशों पर समान रूप से लागू होगा। इससे प्लास्टिक पैकेजिंग की अधिक स्पष्ट और अधिक कुशल रीसाइक्लिंग सुनिश्चित होगी। वर्तमान में माइक्रोप्लास्टिक के कण लगभग हर जगह पाए जाते हैं चाहे वह पानी हो, भोजन, मछली और यहां तक कि स्तन के दूध में भी इसको देखा गया है। आर्थिक पहलुओं पर गौर करते हुए, शोध में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि वर्तमान रीसाइक्लिंग करने की तकनीकों को अक्सर किफायती तरीके से उच्च गुणवत्ता वाले पुनर्चक्रित प्लास्टिक का उत्पादन करने में विफल रहती हैं। जिसके कारण पुनर्चक्रित प्लास्टिक दुनिया भर के बाजारों में शुद्ध प्लास्टिक की तुलना में दो से तीन गुना कम कीमत पर बेचे जाते हैं। इसके अलावा चीन, अन्य एशियाई देशों और उत्तरी अमेरिका से अधिक आपूर्ति पुनर्चक्रित प्लास्टिक की

प्रतिस्पर्धा को और कम कर देती है। क्योंकि शुद्ध प्लास्टिक अक्सर अधिक अनुकूलनीय और किफायती होते हैं, इसलिए वे निर्माताओं के लिए पसंदीदा विकल्प बने हुए हैं। वर्तमान में माइक्रोप्लास्टिक के कण लगभग हर जगह पाए जाते हैं चाहे वह पानी हो, भोजन, मछली और यहां तक कि स्तन के दूध में भी इसको देखा गया है। शोध में कहा गया है कि शुरुआती छंटाई, जिसमें घर के माहौल में कचरे को तुरंत उसके प्रकार के अनुसार अलग किया जाता है, द्वितीयक छंटाई से अधिक कुशल है, जिसमें मिश्रित कचरे को केवल छंटाई केंद्रों पर ही छांटा जाता है, लेकिन लोगों को ऐसा करने के लिए प्रेरित करना एक चुनौती बनी हुई है। एक आम मिथक यह है कि छांटा गया कचरा आखिरकार लैंडफिल में चला जाता है या जला दिया जाता है, जिससे रीसाइक्लिंग के लिए लोगों की प्रेरणा कम हो जाती है। इसलिए शैक्षिक पहल जो संग्रह से लेकर रीसाइक्लिंग तक कचरे की यात्रा को दिखाती हैं, जो बहुत महत्वपूर्ण हैं। शोध के अनुसार, प्लास्टिक पैकेजिंग कचरे की रीसाइक्लिंग की तकनीकें पर्याप्त रूप से विकसित हैं और इनमें लगातार सुधार किया जा रहा है, मिश्रित पैकेजिंग को रीसायकल करना अभी भी चुनौतियां बना हुआ है। वर्तमान में माइक्रोप्लास्टिक के कण लगभग हर जगह पाए जाते हैं चाहे वह पानी हो, भोजन, मछली और यहां तक कि स्तन के दूध में भी इसको देखा गया है। शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा है कि वर्तमान समाधान अक्सर समस्याग्रस्त होते हैं, न केवल तकनीकी रूप से, बल्कि आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से भी, यही वजह है कि इको-डिजाइन पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जा रहा है। यह केवल इस बात पर नहीं है कि पैकेजिंग को रीसाइकल किया जा सकता है या नहीं, बल्कि इसके शुरुआती डिजाइन पर भी है, यह सुनिश्चित करना कि इसे रीसाइकल या दोबारा उपयोग करना आसान है।

नर्मदा जयंती के तहत आयोजित दीपदान में आटे एवं पत्तल के दियो का उपयोग हो - प्रभारी मंत्री

नर्मदा जयंती के दिन आम जनों को घाटों पर पहुंचने में कोई असुविधा न हो, प्रशासन लोगों की राह आसान बनाएँवाँस टावर के आसपास अनाउंसमेंट की व्यवस्था हो प्रभारी मंत्री ने नर्मदा जयंती एवं राम जी बाबा मेला की तैयारी की समीक्षा की

नर्मदापुरम प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री एवं नर्मदापुरम जिले के प्रभारी मंत्री श्री राकेश सिंह ने मंगलवार को नर्मदा जयंती के आयोजन के संबंध में सक्षम समिति की बैठक ली। प्रभारी मंत्री ने निर्देश दिए की नर्मदा जयंती के अवसर पर घाटों पर दीपदान करने की परंपरा रही है। दीपदान में आटे के एवं पत्तल के दियो का उपयोग किया जाए। प्लास्टिक पूर्णतः प्रतिबंधित रहे। प्रभारी मंत्री ने निर्देश दिए की नर्मदा जयंती के अवसर पर आम श्रद्धालुओं को भी कोई दिक्कत का सामना ना करना पड़े वह आसानी से घाटों पर पहुंच सके, इसके लिए जिला प्रशासन श्रद्धालुओं की राह आसान बनाएं। उन्हें अनावश्यक रूप से घाटों तक जाने से ना रोके। प्रभारी मंत्री ने कहा की नर्मदा जयंती के अवसर पर विभिन्न घाटों पर काफी भीड़ रहती है तो ऐसे में वाँस टावर के आसपास अनाउंसमेंट की व्यवस्था हो। लोग आकर अपनी परेशानी बता सके। वाँस टावर पर पुलिस के जिम्मेदार अधिकारियों की तैनाती की जाए। ताकि वे लोगों की समस्या धैर्य से सुन सके। प्रभारी मंत्री ने कहा कि सेठानी घाट पर बनाए जाने वाले जल मंच पर पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

इसके पूर्व कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने नर्मदा जयंती के आयोजन के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि नर्मदा जयंती का महोत्सव 2 से 3 दिन तक आयोजित किया जाएगा। 3 फरवरी को नगर पालिका द्वारा प्रस्तावित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस दिन प्रातः 9:00 बजे से मंगलाचरण, मां नर्मदा का पूजन अर्चन, आंदराजलि के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।



साथ ही रंगोली चित्रकला की प्रतियोगिता भी आयोजित की जाएगी। लोक गायन होगा, वही 4 फरवरी नर्मदा जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री जी का कार्यक्रम प्रस्तावित है। मुख्यमंत्री जी का शाम 5:00 बजे आगमन होगा। कन्या पूजन, अतिथियों द्वारा नर्मदा आरती एवं पूजन का कार्य के कार्यक्रम के पश्चात अतिथियों का उद्बोधन होगा। उसके पश्चात नगर पालिका द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन देर रात्रि तक किया जाएगा। कलेक्टर ने बताया कि सेठानी घाट पर बनाए जाने वाले जल मंच की क्षमता का प्रमाण पत्र जल संसाधन विभाग द्वारा दिया जाएगा। जल मंच पर 80 लोगों के बैठने की क्षमता रहेगी। सुरक्षा के लिए एडिशनल एसपी, कमांडेंट होमगार्ड और अन्य पुलिस बलों की तैनाती की जाएगी। जल मंच पर जो व्यक्ति आएंगे उनके सर्टिफिकेट एसडीएम देंगे। घाट पर मीडिया के बैठने की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। मुख्यमंत्री सर्किट हाउस से बोट पर सवार होकर जल मंच तक आएंगे। कलेक्टर ने बताया कि सभी लोगों को आमंत्रण पत्र समय से पूर्व दिया जाएगा। तिलक भवन में इमरजेंसी वार्ड बनाकर यहां डॉक्टर और

एंबुलेंस की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। घाट पर तैराको का दल पर्याप्त संख्या में रहेंगे। विद्युत आपूर्ति निर्बाध गति से की जाएगी। घाट पर लाइव जैकेट एवं अन्य व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। नगर पालिका शहर के प्रमुख स्थानों पर एलईडी के माध्यम से जल मंच के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण सुनिश्चित कराएंगी। 4 फरवरी की सुबह शोभा यात्रा भी निकाली जाएगी। घाट पर कंट्रोल रूम भी बनाया जाएगा। राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया ने कहा कि तवा से अनायास पानी न छोड़ा जाए इसकी चिंता की जाएगी। नर्मदापुरम विधायक डॉक्टर सीता सरन शर्मा ने कहा कि जिले के सभी अधिकारी अनुभवी हैं। उन्होंने कहा की संस्कृति विभाग से संपर्क करके सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए आवश्यक सहयोग लिया जाए। सोहागपुर विधायक ठाकुर विजयपाल सिंह ने कहा कि लाइटिंग ऊपर जलती रहे नीचे उजाला होता रहे। पंडित गोपाल खंडहर ने कहा कि आमंत्रण पत्र में हमेशा नर्मदा जयंती का उल्लेख रहता है लेकिन नर्मदा जयंती के बजाय नर्मदा प्रकट उत्सव शब्द का उल्लेख किया जाए। अनोखेलाल राजोरिया ने कहा की इस दिन मांस मंदिरा की दुकानों पर

पूर्णता रोक रहे। एक अन्य सदस्य ने कहा कि घाटों पर आम जनों की भावना का ध्यान रखते हुए उनके आने जाने पर रोक ना लगाई जाए। श्री राकेश फौजदार ने कहा कि डॉग ब्राइट की घटनाएं बहुत हो रही हैं। नर्मदा जयंती के अवसर पर अपार भीड़ रहेगी अतः ऐसी घटना ना हो। श्री मनोहर बडानी ने कहा कि कुंभ मेले को देखते हुए दीपदान की भव्य व्यवस्था की जाए।

प्रभारी मंत्री श्री राकेश सिंह ने आगामी 10 फरवरी से 24 फरवरी तक आयोजित होने वाले राम जी बाबा मेले की तैयारी के संबंध में प्रशासन द्वारा की गई तैयारी की समीक्षा की। प्रभारी मंत्री ने निर्देश दिए की राम जी बाबा मेले के दौरान दुकानों का आवंटन समय से पूर्व किया जाए। साथ ही दुकानों के आवंटन का परीक्षण अनिवार्य रूप से कर लिया जाए, की जिनके नाम पर दुकानों का आवंटन किया गया है दुकान उन्हें मिली कि नहीं।

कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने रामजी बाबा मेला की तैयारी के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि मेला गुप्ता ग्राउंड में प्रस्तावित किया गया है। 8 फरवरी तक दुकानों का एवं झूलो का आवंटन

कर दिया जाएगा। रामजी बाबा मेला पूर्ण गरिमाय एवं धार्मिक रूप से मनाया जाएगा। सांस्कृतिक कार्यक्रम में स्थानीय कलाकारों की सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। पुलिस चौकी की एवं महिला पुलिस की व्यवस्था पर्याप्त संख्या में रखी जाएगी। मेला स्थल पर मुख्य कार्यपालन दंडाधिकारियों की ड्यूटी लगाई जाएगी। दुकानों में बिकने वाले खाद्य पदार्थों के सैंपल की भी जांच संबंधित विभाग द्वारा की जाएगी। कलेक्टर ने बताया कि रामजी बाबा मेला में बैलगाड़ी दौड़ का आयोजन भी किया जाएगा। कलेक्टर ने बताया कि वाहन पार्किंग के लिए वाहन पार्किंग की नीलामी की जाएगी। ट्रैफिक पुलिस बसों के रूट परिवर्तन करेगी। कलेक्टर ने प्रभारी मंत्री को अवगत कराया की राम जी बाबा मेला में पॉलिथीन का उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा। कलेक्टर ने कहा कि मेला अवधि के दौरान विभिन्न विभागों की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया ने कहा कि रामजी बाबा मेला में स्व सहायता समूह की बहनों को निशुल्क स्टॉल आवंटित किया जाए।

स्वामी विवेकानंद के विचार मात्र से ही राष्ट्र भक्ति और युवा शक्ति की होती है अनुभूति -मुख्यमंत्री डॉ. यादव



भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि युग प्रवर्तक, युग प्रणेता और चिर युवा स्वामी विवेकानंद के विचार मात्र से ही राष्ट्र भक्ति और युवा शक्ति की अनुभूति होती है। स्वामी विवेकानंद ने सनातन संस्कृति, सभ्यता और भारतीय दर्शन को जिस प्रकार विश्व में स्थापित किया वह आज भी हम भारतीयों को गौरवान्वित करता है। उनका उठो-जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो का संदेश परमात्मा द्वारा व्यक्ति को प्रदान किए गए असीम ऊर्जा के भण्डार का अनुभव कराकर अपने स्वप्न और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्राण-प्रण से प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है। यह हमारा सौभाग्य है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रभावी नेतृत्व और मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप स्वामी विवेकानंद की भविष्य वाणी कि 21 वीं सदी भारत की होगी को हम चरितार्थ होते हुए देखेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव स्वामी विवेकानंद जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय युवा दिवस पर भोपाल के सुभाष उत्कृष्ट विद्यालय में आयोजित राज्य स्तरीय सामूहिक सूर्य नमस्कार कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मां सरस्वती और स्वामी विवेकानंद के चित्रों पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम राष्ट्रगीत वंदे मातरम के गान के साथ आरंभ हुआ, इस अवसर पर स्वामी विवेकानंद का रिकॉर्डेड ऑडियो संदेश भी प्रसारित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विद्यार्थियों के साथ सूर्य नमस्कार तथा सूर्य नमस्कार के तीन चक्र और प्राणायाम के अंतर्गत अनुलोम-विलोम- भ्रामरी -भर्त्सिका आदि योग किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारतीय संस्कृति में 10 सुखों का उल्लेख है, जिसमें पहला सुख निरोगी काया को माना गया है और निरोगी काया प्राप्त करने का श्रेष्ठतम मार्ग योग है। इसी आधार पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वामी विवेकानंद जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस के साथ सूर्य नमस्कार को जोड़कर स्वयं को स्वस्थ रहने की प्रेरणा दी है। सूर्य ही ऊर्जा का स्रोत है और इस ऊर्जा के साथ योग की पद्धति को जोड़ने से स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन का मार्ग प्रशस्त होता है।

14 से 28 जनवरी के मध्य इंदौर ज़िले में मनाया जायेगा आनंद उत्सव

इंदौर जीवंत सामुदायिक जीवन नागरिकों की जिन्दगी में आनंद का संचार करता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये राज्य आनंद संस्थान-आनंद विभाग के निर्देशन में जिला प्रशासन द्वारा 14 से 28 जनवरी के मध्य इंदौर ज़िले के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में आनंद उत्सव मनाया जायेगा।

आनंद उत्सव का उद्देश्य नागरिकों में सहभागिता एवं उत्साह को बढ़ाने के लिये समूह स्तर पर खेल-कूद और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। आनंद उत्सव की मूल भावना प्रतिस्पर्धा नहीं वरन सहभागिता होगी। आनंद उत्सव, नगरीय और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में आयोजित किए जाएंगे। आनंद उत्सव में प्रमुख रूप से स्थानीय तौर पर प्रचलित परम्परागत खेल-कूद जैसे कबड्डी, खो-खो, बोरा रेस, रस्सा कसी, चेअर रेस, पिट्टू, सितोलिया, चम्मच दौड़, नीबू दौड़ आदि तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे लोक संगीत, नृत्य, गायन, भजन, कीर्तन, नाटक आदि एवं स्थानीय स्तर पर तय अन्य कार्यक्रम किये जायेंगे। आनंद उत्सव का आयोजन इस तरह से किया जायेगा कि समारोह की गतिविधियों में समाज के सभी वर्गों यथा- महिला-पुरुष, सभी आयु वर्ग के नागरिक, दिव्यांग आदि शामिल हो सकें। इस कार्यक्रम में 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के महिला/पुरुषों, दिव्यांगों एवं बुजुर्गों की विशेष सहभागिता सुनिश्चित करने के लिये आनंद उत्सव के कार्यक्रमों में उनके अनुकूल गतिविधियों का आयोजन भी होगा।

कचरा प्रबंधन में लापरवाही करने पर पंचायत सचिव की रोकी वेतनवृद्धि

सीईओ जिला पंचायत श्री सिद्धार्थ जैन ने ग्राम पंचायत सनावदिया के सचिव पर की कार्यवाही

इंदौर, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री सिद्धार्थ जैन द्वारा इंदौर ग्रामीण क्षेत्र की ग्राम पंचायतों में स्वच्छता गतिविधियों की समीक्षा बैठक ली गई। उन्होंने स्वच्छता के सभी घटकों पर सचिवों एवं सरपंचों से चर्चा की। नगर निगम क्षेत्र से लगी हुई ग्राम पंचायतों देवगुराडिया, दूधिया, सनावदिया, नैनोद, बांक, रंगवासा, सिंहासा, केलोद हाला, मांगलिया, भाँगया आदि पंचायतों के सचिवों एवं सरपंचों के साथ बैठक कर इन गाँवों में स्वच्छता गतिविधियों की समीक्षा की गई। बैठक में समस्त जनपद पंचायतों के सीईओ भी उपस्थित रहे।

भविष्य में स्वच्छ सर्वेक्षण 2025 संभावित होने से इन गाँवों का कचरा शहरी सीमा में आने से इसके प्रबंधन की आवश्यकता को देखते हुये इन पंचायतों में स्वच्छता के लिये की जा रही प्रक्रिया एवं संसाधनों का आंकलन बैठक में किया गया। बताया गया कि कुछ ग्राम पंचायतों में अभी भी आवश्यक संसाधन जैसे कचरा गाड़ियाँ और सफाई कर्मियों की और आवश्यकता है। विशेषकर शहरी क्षेत्र से लगी ग्राम पंचायत में नियमित रूप से सफाई व्यवस्था व ग्राम पंचायत से निकल रहे कचरे का निष्पादन समय सीमा में किया जाना अत्यंत आवश्यक है। श्री जैन द्वारा स्वच्छता कार्यों की ग्राम पंचायतवार समीक्षा पर पाया गया कि ग्राम पंचायत सनावदिया जनपद पंचायत इंदौर में स्वच्छता मानक अनुरूप नहीं होने की लगातार शिकायत प्राप्त होने के पश्चात भी पंचायत द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है, जबकि ग्राम पंचायत में कचरा वाहन, शोग्रीगेशन शेड उपलब्ध है। यहाँ पर कचरा शेड के बाहर डंप किया जा रहा है एवं मुख्य मार्ग पर भी गांव का कचरा डंप किया जा रहा है। इस लापरवाही पर सचिव ग्राम पंचायत सनावदिया परमानन्द कुशवाह पर कार्यवाही करते हुए तत्काल प्रभाव से एक वेतन वृद्धि रोकने के आदेश जारी किए गए। बैठक में उपस्थित पंचायतों को अपने क्षेत्र में पर्याप्त सफाई व्यवस्था बनाये जाने के निर्देश दिए गये तथा 15 दिवस में पुनः समीक्षा बैठक आयोजित करने के निर्देश दिये गये।

क्षिप्रा नदी होगी निर्मल और निरंतर प्रवहमान

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि क्षिप्रा नदी अब निर्मल और निरंतर प्रवहमान होगी। 13 जनवरी को 614 करोड़ 53 लाख रुपये की लागत की सेवरखेड़ी-सिलारखेड़ी परियोजना का भूमि-पूजन कार्तिक मेला ग्राउंड उज्जैन पर किया इस अवसर पर केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल भी उपस्थित रहे कार्यक्रम की अध्यक्षता जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने की। कार्यक्रम में सांसद श्री अनिल फिरोजिया, बाल योगी उमेशनाथ महाराज, कौशल विकास एवं रोजगार राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं उज्जैन जिले के प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल शामिल हुए। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने रविवार को कार्तिक मेला ग्राउंड कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया और तैयारियों का जायजा लिया। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि कार्यक्रम का आयोजन सम्पूर्ण गरिमा के साथ किया यह हम सब के लिए महत्वपूर्ण क्षण है। उन्होंने आमजन से कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में सह भागिता का आह्वान किया। मंत्री ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी बाजपेयी का सपना था कि देश की नदियाँ निरन्तर प्रवाहमान रहें और सिंचाई का रकबा बढ़े। क्षिप्रा नदी को सदैव प्रवाहमान देखने का सपना मूर्तरूप लेने जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा सेवरखेड़ी-सिलारखेड़ी परियोजना का भूमि पूजन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के कुशल नेतृत्व में आगामी सिंहस्थ महापर्व के आयोजन तक संतजन और श्रद्धालु क्षिप्रा नदी में शुद्ध और निर्मल जल से स्नान कर सकेंगे। परियोजना से क्षिप्रा नदी को निरंतर प्रवाहमान बनाए रखने के साथ ही उज्जैन को पेयजल के लिये पर्याप्त जल उपलब्ध हो सकेगा। पेयजल के उपयोग के लिये 27 एमसीएम तथा क्षिप्रा को प्रवाहमान बनाए रखने के लिए 51 एमसीएम जल उपलब्ध कराया जाएगा। परियोजना के अंतर्गत ग्राम सेवरखेड़ी में बैराज निर्माण किया जाएगा, जिसमें वर्षाकाल में जल भराव होगा फिर उसे उद्वहन कर सिलारखेड़ी तालाब में संग्रहित किया जाएगा। 6.50 किलोमीटर लम्बी पाइप लाइन से जल का उद्वहन सेवरखेड़ी से सिलारखेड़ी तक किया जाएगा।

कुंभ हो या महाकुंभ, प्रदूषित ही रहा प्रयाग संगम का पानी

लखनऊ। क्या उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में हो रहे महाकुंभ में गंगा जल पूरी तरह से स्वच्छ हैं? मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक 14 जनवरी, 2025 को दोपहर 3 बजे तक 2.50 करोड़ श्रद्धालुओं ने संगम में डुबकी लगाई। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के आदेशों के मुताबिक इन श्रद्धालुओं को इस बात की जानकारी दी जानी चाहिए थी कि ये किस गुणवत्ता वाले जल में डुबकी लगाने जा रहे हैं। हालांकि, ऐसा नहीं किया जा रहा है।

एनजीटी ने दिसंबर, 2024 के अपने एक आदेश में कहा कि महाकुंभ के दौरान प्रयागराज में गंगाजल की पर्याप्त उपलब्धता हो और साथ ही गंगाजल की गुणवत्ता पीने-आचमन करने और नहाने योग्य होनी चाहिए। महाकुंभ को देखते हुए मकर संक्राति में आस्था का जनसैलाब प्रयागराज के कुछ किलोमीटर दायरे के एक अस्थायी शहर में उमड़ आया है और गंगा में स्नान कर रहा है। इसके बावजूद गंगा की एक छोटी धारा को भी पूरी तरह से स्वच्छ नहीं किया जा सका है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के रीयल टाइम वाटर क्वालिटी मॉनिटरिंग सिस्टम के मुताबिक प्रयागराज संगम के अपस्ट्रीम यमुना में बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) की मात्रा 14 जनवरी, 2025 को दोपहर 2 बजे तक अपनी सामान्य सीमा 3 एमजी प्रति एमएल से अधिक 4.25 एमजी प्रति एमएल तक मापी गई। बीओडी अधिक होने का मतलब है कि पानी में मौजूद कार्बनिक पदार्थों की मात्रा ज्यादा है और पानी की गुणवत्ता अच्छी नहीं है। उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) के मुताबिक संगठित स्नान के लिए बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) का मान 5 दिन 20 डिग्री सेंटीग्रेड पर 3एमजी प्रति लीटर या उससे कम होना चाहिए। नदी में बहाव को ठीक करने के लिए लगातार पानी छोड़े के बावजूद यह परिणाम चिंताजनक है। इसका अर्थ है कि नालों से या फिर एसटीपी के जरिए सीवेज प्रबंधन को बेहतर तरीके से अंजाम नहीं दिया जा रहा है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के एक पुराने आदेश के मुताबिक 24 घंटे रीयल टाइम मॉनिटरिंग के तहत ऑनलाइन माध्यम और डिस्प्ले के जरिए श्रद्धालुओं को गंगा के जल की गुणवत्ता के बारे में सूचित करना है। इसके लिए तैयार किया गया प्लेटफॉर्म सुटेबिलिटी ऑफ रिवर गंगा वाटर काम नहीं कर रहा है। वहीं, गंगा-यमुना जल की गुणवत्ता को लेकर उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की वेबसाइट पर सिर्फ नवंबर, 2024 तक के जल गुणवत्ता आंकड़े मौजूद हैं। ऐसा पहली बार नहीं है। 2019 में प्रयागराज के कुंभ पर सीपीसीबी की विश्लेषण रिपोर्ट खुद ही यह स्पष्ट करती है कि प्रमुख स्नान वाले दिनों में भी पानी की गुणवत्ता ठीक नहीं रही। सीपीसीबी की रिपोर्ट एनवायरमेंटल फुटप्रिंट्स



ऑफ मास बाथिंग ऑन वाटर क्वालिटी ऑफ रिवर गंगा ड्यूरिंग कुंभ मेला में यह स्पष्ट किया है। सीपीसीबी की इस रिपोर्ट के मुताबिक 2019 के कुंभ मेले में 13.02 करोड़ लोगों ने हिस्सा लिया। वहीं, इस दौरान कर्सर घाट पर बीओडी और फीकल कोलिफॉर्म मानकों से अधिक पाए गए। जिस दिन प्रमुख स्नान हुआ उन अवसरों पर बीओडी के मान शाम को सुबह की तुलना में काफी बढ़े हुए पाए गए। इसके अलावा महाशिवरात्रि और उसके बाद फीकल कोलिफॉर्म सुबह और शाम दोनों समय मानकों से अधिक पाया गया। यमुना नदी में डिजॉल्वड ऑक्सीजन सभी अवसरों पर मानकों के अनुरूप था, जबकि पीएच बीओडी और फीकल कोलिफॉर्म कई अवसरों पर मानकों के अनुरूप नहीं थे। गंगा नदी की सहायक नदियों में, काली नदी को अन्य नदियों की तुलना में सबसे अधिक प्रदूषित पाया गया। पीएच का मान यदि 6 से 8 के बीच नहीं है तो स्नान के वक्त यह आपकी आंखों, कान और नाक जैसे संवेदनशील अंगों में जलन पैदा कर सकता है। वहीं, नदी में डिजॉल्वड ऑक्सीजन यदि 5 एमजी प्रति लीटर से कम है तो नदी मृतप्राय होने लगती है। वहीं, फीकल कोलिफॉर्म ज्यादा होने का मतलब है कि नदी में मल की मौजूदगी स्वीकार्य सीमा से ज्यादा है। सीपीसीबी की रिपोर्ट में चौंकाने वाला यह है कि संगम जहां विशेष तौर पर लोग स्नान करते हैं वहां जल कुंभ के दौरान प्रदूषित ही बना रहा।

डेकन ज्वालामुखी का उष्णकटिबंधीय वनस्पतियों पर क्यों नहीं पड़ा असर?

मुंबई। एक नए अध्ययन में कहा गया है कि डेकन ज्वालामुखी का उष्णकटिबंधीय वनस्पतियों पर कोई बुरा असर नहीं पड़ा। यह लगभग 6.6 करोड़ साल पहले हुई ज्वालामुखी विस्फोट की घटना थी, जिसके कारण बड़े पैमाने पर जीव-जंतु विलुप्त हो गए थे। डेकन ज्वालामुखी ने अप्रत्यक्ष रूप से विविध उष्णकटिबंधीय वनस्पतियों के विकास पर अच्छा असर डाला, क्योंकि इसने जिम्नोस्पर्मों या अनावृतबीजी के साथ-साथ डायनासोरों के विशाल समुदाय को नष्ट कर दिया। यही नहीं, इसने एंजियोस्पर्मों या आवृतबीजी के पैदा और विकास के लिए अनुकूल गर्म तथा नमी वाली जलवायु के भीतर नवजात, अछूते, बंजर किन्तु उपजाऊ आवास उपलब्ध करवाने में मदद की।

इस अध्ययन से इस बात की आशा जगती है कि यदि हमारे उष्णकटिबंधीय वर्षावनों को बिना छेड़े रहने दिया जाए तो वे अनुकूल जलवायु परिस्थितियों में शीघ्र ही पुनर्जीवित हो सकते हैं। डेकन ज्वालामुखी विस्फोट क्रेटेशियस-पेलियोजीन सीमा से पहले और उसके बाद कई लाख साल तक जारी रहा। इससे पता चलता है कि यह क्रेटेशियस-पेलियोजीन सामूहिक विलुप्ति को आगे बढ़ाने वालों में से एक था, जिसने दुनिया भर में अमोनॉइड या अकशेरुकी सेफेलोपोड्स और डायनासोर प्रजातियों को खत्म कर दिया था। हालांकि इस घटना से पड़ने वाले प्रभाव की गहनता से जांच की गई, लेकिन वनस्पतियों पर इसके प्रभाव पर बहस जारी है। डेकन ज्वालामुखी के उपरिकेंद्र के रूप में, भारतीय प्लेट इस समय के दौरान किसी भी संबंधित बदलाव की पहचान करने के लिए एक अहम जानकारी प्रदान करती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के स्वायत्त संस्थान बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट

ऑफ पैलियोसाइंसेज (बीएसआईपी) के एक अध्ययन से पता चलता है कि स्थलीय जीवों, विशेषकर डायनासोर के लिए अत्यधिक विनाशकारी परिणामों के बावजूद, डेकन ज्वालामुखी ने वनस्पतियों पर केवल क्षेत्रीय और छोटी से अवधि तक प्रभाव डाला। इसके बजाय इसने भारतीय पठार पर विभिन्न आवासों के भीतर एंजियोस्पर्म के विविधीकरण को बढ़ावा दिया। निष्कर्ष रूप से अंतर-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (आईटीसीजेड) के भीतर भारतीय पठार का अक्षांशीय बदलाव, अफ्रीका और भारत के बीच एक फिल्टर कॉरिडोर का निर्माण और डेकन ज्वालामुखी के निष्क्रिय चरणों के दौरान अत्यधिक गर्म तथा नमी वाली जलवायु ने उष्णकटिबंधीय वर्षावन समुदाय में विलुप्त होने के बजाय तेजी से विकास और विविधीकरण को बढ़ावा दिया। शोध के मुताबिक, वैज्ञानिकों ने पराग, बीजाणुओं और कार्बनिक पदार्थों का अध्ययन करके इसका पता लगाया, जिसे उन्होंने जीवित और जीवाश्म रूपों में तलछटी चट्टानों से निकाला था। चट्टान (मडस्टोन और क्लेस्टोन) के नमूने महाराष्ट्र के येओतमल क्षेत्र से 17 मीटर मोटी तलछटी श्रृंखला से जमा किए गए थे। पैलिनोमॉर्फ्स पराग, बीजाणुओं और कार्बनिक पदार्थ को पैलिनोलॉजिकल और पैलिनोफेसीज विश्लेषण के लिए विभिन्न एसिड के साथ मिलाकर नमूनों से निकाला गया था। पैलिनोलॉजी का उपयोग बायोस्ट्रेटीग्राफी की स्थापना और पैलियोइकोलॉजी, पैलियोक्लाइमेट तथा पैलियोबायोजियोग्राफी के पुनर्निर्माण के लिए किया जाता है, जबकि पैलिनोफेसीज अध्ययनों का उपयोग निक्षेपण पर्यावरण के पुनर्निर्माण के लिए किया गया था।